रिकॉर्ड :– तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो.....
ओमशांति! ये गीत बच्चों ने सुना। ये महिमा गाते आते हैं। जब महिमा गाते हैं तो बुद्धि चली जाती है ऊपर में; क्योंकि आत्मा ही अपने बाप को कहती है। ये अभी आत्मा से पूछो कि बरोबर हम किसको याद करते थे? अभी वो ही खिवैया वा पतित–पावन वा सच्चा–2... बाप ने जैसे रात को भी समझाया कि बाप आ करके बच्चों को मैसेज देते हैं। बाप ने समझाया– ये सभी दिल से समझने का है। और कोई भी जिसको मैसेन्जर्स कहा जाता है, पैगम्बर्स कहा जाता है, वो हैं तो मुख्य यही– इस्लामी,बौद्धी,क्रिश्चियन या कोई छोटे–2, मोटे। ये भी समझते हो कि धर्म स्थापक बड़े भी होते हैं, छोटे भी होते हैं और मैसेज या पैगाम देने वाला कोई है नहीं। ये ऐसे उन्हों की महिमा कर दी है फालतू, जिसको झूठी महिमा कहा जाता है। अब ये तो बच्चे समझ गए सिवाय एक के और इस मनुष्य सृष्टि में महिमा किसकी नहीं है। जिनकी भी महिमा करते हैं, तो ज़रूर महिमा तो सबसे जास्ती ये तो मनुष्य इनकी करते हैं; क्योंकि सतयुग के ये नए हैं, सतयुग नई दुनिया के मालिक हैं। सो भी तो भारतवासी ही जानते हैं। और दुनिया वाले तो सिर्फ इतना जानते हैं कि भारत प्राचीन देश है और भारत में गॉड एण्ड गॉडेसेज़ का राज्य था। ऐसे भी कहते हैं बहुत; क्योंकि कृष्ण को भी गॉड कह देते हैं। देखो, ये चित्र देवताओं के बड़े–2 देखते हैं। उनको लोग गॉड भी कहते हैं। तुम भी भारतवासी भगवती और भगवान कहते हो; परन्तु किसको भी ये पता नहीं है कि ये भगवती और भगवान सतयुग के आदि में मनुष्यों के...। मनुष्यों को कहते हैं ना। क्यों कहते हैं भगवती–भगवान? क्योंकि नई सृष्टि में, ये रचने वाला तो भगवान है, क्रियेट करने वाला भगवान। तो भगवान ने क्रियेट किया गॉड एण्ड गॉडेज का राज्य। यूँ तो बुद्धि कहती है कि जब भगवान के हम सब बच्चे हैं तो फिर हमको सबको भगवान और भगवती होना चाहिए; क्योंकि एक के बच्चे हैं ना सब; परन्तु नहीं, ये ड्रामा ही ऐसे बना हुआ है, जो बाप बैठ करके समझाते हैं। ... बुद्धि ऐसे कहती है, उसमें भी खास भारतवासियों की तो बुद्धि ज़रूर कहनी चाहिए कि हम भारतवासी पहले–2 ही थे यहाँ इस नई दुनिया में, और तो कोई था नहीं; परन्तु ये भी, जो बाप बैठकर समझाते हैं, ये भी कोई के बुद्धि में, ये बात आती नहीं। समझा ना! जो बाप ये बताते हैं और शतशः सच्ची बात है कि यहाँ भारत में, नई दुनिया में ; देखो, नई दुनिया को तो सब याद करते हैं ना– बापू जी फलाना–टीरा– ये नई दुनिया हो। (बच्चे के रोने की आवाज़ आती है) देखो, ये जो बच्चे हैं ना, इनको तो कहाँ दूर...। वो उनको जब ज्ञान भी नहीं है, बस कच्छ में ले करके भागते हैं, कुछ समझ नहीं पड़ती है। बिल्कुल आवाज़ नहीं चाहिए ज्ञान में।.. सुनना होता है। तो बाप बैठ करके समझाया, क्या समझाया, देखो प्वॉइंट उड़ गई ...एक आवाज़ से। इतनी डिस्टर्बेन्स होती है। क्या प्वॉइंट था, बताओ। (किसी ने कहा– नई दुनिया के बारे में) नई दुनिया के बारे में। देखो, नई दुनिया तो सभी चाहते हैं। बापू जी भी नई दुनिया चाहते थे। .....नई दुनिया भी कौन–सी हो? अभी समझते कुछ नहीं हैं बच्चे बिल्कुल ही; परन्तु फिर भी आत्माएँ हैं ना कि रामराज्य चाहिए। रामराज्य का अर्थ बच्ची कोई नहीं जानते हैं। बाबा ने कहा ना– बिल्कुल ही तमोप्रधान बुद्धि यानी पत्थर बुद्धि। एकदम माया का लॉकप। देखो, कोई समझेगा अपन को कि मैं कोई पत्थर बुद्धि हूँ? आजकल देखो मनुष्यों को कितना अहंकार है और गाया भी जाता है बरोबर कि कलहयुग में पत्थर बुद्धि होते हैं और सतयुग में पारसबुद्धि होते हैं। ये तो बिल्कुल कॉमन बात है समझने की। पर इतनी बिल्कुल समझ नहीं है जो ये समझे कि

बरोबर इस समय में सारे भारतवासी खास ; क्योंकि पारसबुद्धि भी भारतवासी बनते हैं। सतयुगी पारसबुद्धि; कलहयुगी पत्थरबुद्धि। यहाँ बहुत ऐसे मिसाल देते हैं कि बेचते हैं वो सोना, काले को सोना बना करके और वो काला करके फिर जाकर ठगते हैं किसको। तो देखो, मनुष्य इसको ही स्वर्ग समझ करके ठगते हैं मनुष्यों को– यहीं तो ये स्वर्ग है ना। क्या स्वर्ग में विमान नहीं थे! स्वर्ग में देखो ये कितनी बड़ी–2 बिल्डिंग हैं, स्वर्ग में देखो ये कैसे साइंस, सो ये तो देखो मून में चले जाते हैं, फलाना करते हैं। सुख है ना। तुम लोग (को) मालूम नहीं है यहाँ कितना फैशन है मुम्बई में। बस, उस फैशन के पिछाड़ी सारी बुद्धि– आँखें कैसे बनानी चाहिए, ये पिन कैसे और बाल कैसे रखना चाहिए, ये कैसे करना चाहिए, वो कैसे करना चाहिए। उसमें भी बहुत तो फिमेल के बहुत फैशन होने के कारण कशिश करती हैं और फिर गंद हो जाते हैं। दीदी ..एक कथा है ना कि एक ऋषि था और एक बच्ची थी। (किसी ने कहा– अप्सरा) हाँ अप्सरा थी क्या, वो उनके ऊपर, वो ऊपर में कहाँ था, बोला– हमको दरवाजा खोलो, ये खोलो और नहीं खोला, कुछ ऐसी बात है और उनको देखा तो मत्था खराब हो गया उनका। है ना बरोबर; क्यों(कि) सुहेनी देखी बहुत। तो आर्टीफीशियल सुहेनी बनने के लिए अरे यहाँ 50–50 रुपया देते हैं बाल ऐसे बनाने के। सो भी कहाँ से आते हैं? ये सभी चित्रों में से। ये पार्वती के बाल कैसे बनाते हैं अच्छे। बस, समझते हैं हम पार्वती बनें। फिर देखो, बाल बनाती हैं। तो खर्च और कशिश करने के लिए। इससे तो होता है ना ये जो भगाना और ये करना और ये सब। तो बाप बैठे हैं बच्चों को कि उफ बच्चे, आगे पारसी लोग बॉम्बे में थे ना, तो कोई की नज़र न लगे, तो काली जारी देखने की और.....तो कोई आशिक न हो। कुछ समय बीच में बॉम्बे में ऐसे होता था। अभी माताएँ की तो बात ही अलग है, न्यारी है। तो बाप बैठकर समझाते हैं कि अभी चाहते हैं रामराज्य और चित्र हैं यहाँ बहुत अच्छे। तो हम–तुम सब पूजा करते थे ना। पूजा करते थे, कोई का भी कुछ पता नहीं पड़ता था। ...बस जितनी महिमा करो उतनी। जैसे अभी महिमा गाई ना– त्वमेव माताश्च पिता। किसको कहना चाहिए? जब कहते हैं तो समझना चाहिए कि ये माता–पिता ने वर्सा दिया होगा। तो ये भी नहीं, जब कहते हैं– त्वमेव माताश्च पिता, तो इनको मालूम पड़े कि हाँ, बाप ने आ करके वो सुख का वर्सा दिया था। मानते हैं– तुम मात–पिता आएँगी(आएँगे) तो हम आपको अपना बनाएँगी(बनाएँगे) और आपसे पूरा वर्सा लेंगी(लेंगे)। हमारा दूसरा कोई नहीं होगा। देखो, आत्मा कितना कहती है शरीर द्वारा– हम वारी जाऊँगी, तेरे बिगर हम दूसरा कोई की भी सुनेंगे नहीं। एकदम बात भी नहीं सुनेंगे। क्या करेंगे? बहुत ही कहते हैं, महिमा करते हैं। अब तो तुम बच्चे जानते हो कि वही बाबा है, शिवबाबा। कोई ब्रह्मा की तो महिमा नहीं है। ब्रह्मा तो खुद ही कह देते, ब्रह्मा की आत्मा खुद ही कहते हैं– हम सो। तो जभी ब्रह्मा ऐसे कहते हैं, ब्रह्मा के बच्चियाँ भी तो ऐसे ही कहेंगे– हम ब्रह्मा सो पावन सो अंतिम 84 जन्म के अंत में सो हम नंबर वन पावन तो नंबर वन पतित। देखो, ऐसे कह रहे हैं ना। तो तुम बच्चों को, ब्रह्माकुमार–कुमारियों को भी अभी यही कहना है ना– हम पहले, जैसे बाबा कहते हैं, हम सो पहले सूर्यवंशी देवी–देवताएँ पावन, सो 84 जन्म भोग कर करके अभी तुमको मालूम है। अभी समझ गई हो तुम बच्चे। 84 जन्म भोग करके, ऐसे–2 जन्म लेकर हम भी पतित। जैसे काग तैसे बच्चे। जैसे बाप तैसे बच्चे। तो बताते हैं ना। ऐसा तो कोई संन्यासी नहीं बताएँगे कि हम पहले–2 पावन था, पीछे 84 जन्म ले करके ऐसे–2 पतित बने हैं। कोई कहेंगे अपन को? ये तो खुद कहते हैं ना समझाने के समय में कि शिवबाबा भी

कहते हैं, फिर ये भी कहते हैं। शिवबाबा भी कहते हैं– मैं आता ही हूँ, जो पहले नंबर में पूज्य लक्ष्मी और नारायण की डिनायस्टी वाले थे, वो सभी अभी 84 जन्म भोग करके, अभी सभी पतित हैं। पतित थे यानी जभी कलहयुग में थे। अभी संगमयुग पर हैं। तुम भी समझते हो कि हम संगमयुग पर हैं और ये तो देखो कितना फर्क है। ये कहाँ लिखे? ये तो अनुभव की बात हुई ना बच्ची। कोई शास्त्रों में लिखा हुआ तो कोई समझ सकेगा इन बातों को? ये है सन्मुख अनुभव की बात कि बरोबर तुम कलहयुगी थे। अभी तुम संगमयुगी बने हो। बाप संगमयुग पर आते हैं और फिर आ करके बच्चों को...। वो तो बच्चे तो आएँगे ना ज़रूर। ड्रामा के अनुसार देखो आते रहते हैं ना, वृद्धि पाते रहते हैं। ये तो समझती हो, कितना बनेंगे ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ, जो डाडे से वर्सा लेंगे। वृद्धि को पाते रहते हैं, पाते रहते हैं और बरोबर अभी कहते हैं.. अभी ज्ञान तो मिल गया, हम सो अभी ब्राह्मण सो देवता, सो क्षत्रिय, सो वैश्य–शूद्र। ये चक्कर देखो समझाया ना बच्चों को। अब ये चक्कर तो ज़रूर याद कर सकते हैं ना। कोई भी पढ़ते हैं, सो चक्कर तो याद करेंगे ना। ये बच्चियाँ भी तो बहुत सहज है ना, कहती हैं हम कुछ समझ नहीं सकते हैं। अरे, चक्कर नहीं समझ सकती हो? बिल्कुल सहज है– हमने 84 जन्म ऐसे लिए। बाप ने समझाया। तो है कि कई बहुत नहीं समझती हैं। ये भी बुद्धि से काम नहीं करती है ; क्योंकि उनका पद कुछ कम है। जो अच्छी तरह से समझते हैं वो ज़रूर पद...। ये तो बरोबर है, स्टूडेण्ट्स हैं, कोई अच्छा समझते हैं तो पहले नंबर में इस तरफ में जाते हैं। चक्कर होते हैं ना। राइट हैण्ड से शुरू होते हैं। फर्स्ट क्लास, सेकण्ड क्लास, थर्ड क्लास बुद्धि। यहाँ भी तो ऐसी बुद्धि है ना बरोबर। बच्चियाँ खुद कहती हैं– हमारी थर्ड क्लास बुद्धि है। बरोबर कोई की सेकण्ड क्लास बुद्धि है, कोई की फर्स्ट क्लास बुद्धि है। बाबा, हम मानते हैं। ये भी बैठी हैं यहाँ बच्चे और बच्चियाँ, सब मानती हैं– बाबा, हमारी थर्ड क्लास बुद्धि है, हम किसको समझा नहीं सकते हैं। मीठा तो बहुत लगता है, दिल तो बहुत होती है समझावें; परन्तु हम समझा नहीं सकेंगे। अरे, बाबा क्या करें इनको! ये हुआ उनका अपना कर्म का हिसाब–किताब। सो बाप समझाते रहते हैं ये कर्म की गति भी। शास्त्र में तो कह देते हैं– कर्म की गति, भगवान ने कर्म की गति समझाई। कर्म, अकर्म, विकर्म की गति समझाई। ठीक है! पढ़ते भी हैं। अच्छा, कोई संन्यासी से अभी तुम पूछो कि भगवानुवाच– मैं तुमको कर्म,अकर्म,विकर्म की गति समझाता हूँ, इसका अर्थ तो समझाओ। बिल्कुल नहीं जान सकेंगे एकदम। आएगा ही नहीं उनको। फिर वो जो लिखा हुआ है ना अर्थ उल्टा–सुल्टा, वो बताए। तुम बच्चों को ये भी जाकर पूछना चाहिए, जब गीता क्लासों में जाते हैं ना कि ये जो हमने पढ़ा है गीता...। बाबा कहते हैं ना– जाओ .... के लिए, बबूर्ची बनकर बैठो। जा करके समझो ; क्योंकि ये कथा है कि हनुमान; महावीर उसको कहेंगे ना, सभा में जा करके जूते में जाकर पिछाड़ी में बैठ जाते थे। जैसे ये कुछ जानते ही नहीं हैं। ईडियट है एकदम। पीछे वो बैठ करके सुनता था। सुन करके और फिर उनसे वो पूछते थे। तो ऐसा न वो समझे कि ये कोई ; क्योंकि ब्रह्माकुमारियाँ मशहूर हो गई हैं। बस प्रश्न पूछा, वो समझते हैं ये प्रश्न ही है ब्रह्माकुमारियों का। और कोई पूछ ही नहीं सकते हैं। समझा ना। तो भी कोई हर्जा थोड़े ही है। ये बहुत बच्चे हैं, पूछ सकते हैं एक ही अर्थ कि...ये गीता में लिखा हुआ है कि भगवानुवाच। अभी भगवानुवाच कौन है? किस भगवान ने ये सुनाया? कर्म,अकर्म,विकर्म की मैं राज़ या गति सुनाता हूँ। कर्म क्या है, फिर अकर्म क्या है, विकर्म क्या है? अभी कर्म तो ठीक है। तुम बच्चे जानते हो। जो सर्विसेबुल बच्चे हैं

वही समझते हैं। यहाँ बहुत हैं बच्चे, जो थर्ड क्लास बुद्धि वाले हैं। इन बच्चों को समझ नहीं सकते हैं। कर्म माना ही जो कर्म करते हैं– धंधाधोरी वगैरह, खाना पकाना–वकाना। ये सभी इसको कर्म कहा जाता है। अच्छा, कर्म करते हैं इस समय में, बाप बैठकर समझाए ना– ....जो कोई भी कर्म करते हैं, देखो ये कभी किसको मालूम नहीं है कि ये कोई रावण राज्य है। जो कोई भी कर्म करेगा, विकर्म होगा। तो देखो, शुरू से ले करके ऊँचे में ऊँचा गिने जाते हैं गुरू... क्योंकि गुरू सद्गति को पाते हैं यानी इस दुःख की दुनिया से...। गुरू किया ही दुःख की दुनिया में है। गुरू कोई सुख की दुनिया में किया नहीं जाता है। सद्गति के लिए। कहाँ हमको ले जावें? मुक्तिधाम में। सद्गति उसको ही कहा जाता है ना।...ऐसे नहीं है कि कोई गुरू करके शांति देगा। ना–2। गुरू का मतलब ही है कि सद्गति में ले जाओ। यहाँ शांति कोई थोड़े ही हो सकती है आत्मा को। आत्मा को कर्म करना है ना। सो कर्म में कोई शांति...। वो कहते हैं हमको चाहिए...। गुरू माना ही कि हमको मुक्तिधाम में ले जाओ। बस, गुरू गाया ही इनके वास्ते है। ऐसे नहीं गुरू गाया जाता है ये धक्का खिलावे चारों तरफ। नहीं, गुरू का काम है निर्वाणधाम में ले जावे। वानप्रस्थ, वाणी से परे स्थान, उसमें हमको ले जाओ। ये तो सिर्फ कहने मात्र होते हैं ना बच्चे। ये वानप्रस्थी है। ये वानप्रस्थों की सभा है यानी बुड्ढियों की सभा है या बुड्ढों की अलग सभा है। भई क्यों? ये सब काज छोड़ करके, सभी मिल्कियत वगैरह बच्चों को दे करके, अभी कुछ आ करके हिसाब कर देते हैं कुछ न कुछ, दे देते हैं वहाँ कुछ; क्योंकि खाना–पीना तो मिलना चाहिए ना कहाँ से। खाना तो ज़रूर उनके बच्चे–2 पहुँचाएगा ना। तो कुछ न कुछ दे देते हैं, फिर संन्यासियों के पास जा करके रहते हैं। हम वानप्रस्थी हैं। बस, वानप्रस्थ का अर्थ सभी कोई समझते नहीं हैं। गुरू भी नहीं समझते हैं। वो क्या करेगा? मंत्र फेरेगा, बस अपने संग में रखेंगे। तो भई देखो वानप्रस्थ में हैं। अभी वानप्रस्थ का अर्थ वो भी नहीं जानते हैं कि हम अभी वानप्रस्थी हैं। हमको वाणी से परे स्थान, निराकारी दुनिया में जाना है वा मूलवतन में जाना है यानी घर जाना है। अभी वो घर नहीं समझते हैं। वो तो कहते हैं ज्योति ज्योत में समाएगा, बुदबुदा मिल जाएगा, ये फलाना होगा। वो तो घर है ना बच्चे। निर्वाणधाम को वाणी से परे धाम, आत्माओं का घर। देखो तुम, कितनी जन्म–जन्मांतर ये होता आया है। 60 बरस के बाद, शुरुआत में तो पक्का–पक्का 60 बरस के बाद छोड़ते ही थे। एक जैसे कि कायदा था। उम्र देखेंगे, आयु देखेंगे, 60 बरस हुई, बस फिर संग करेगा संन्यासियों का। चला आता है, अभी भी है। बाबा कहते हैं ना– सभी उनके पास जाओ; क्योंकि वो तो तैयारी कर रहे हैं कि हम वानप्रस्थ जावें। तो उनको तो तुम बहुत सहज समझा सकते हो कि तुम वाणी से परे जाना चाहते हो; परन्तु वाणी से परे कोई एक/दो तो जा भी नहीं सकेंगे। कोई भी नहीं जा सकेंगे वाणी से परे। तो बुलाते हैं बाप को कि हमको यहाँ से घर ले चलो। हे पतित–पावन आओ, हमको पावन बनाय घर ले चलो। यानी मुक्तिधाम तो घर है ना। मुक्तिधाम को घर कहा जाता है, आत्माओं का घर और सतयुग है जीवआत्माओं का सुख का घर और कलहयुग है जीवआत्माओं का दुःख का घर। अभी ऐसे भी बच्चे सभी समझते हो कि सतयुग में मनुष्य ज़रूर थोड़े होंगे। कलहयुग में ज़रूर बड़े होंगे। झाड़ को बड़ा होना होता है। तो तुम बच्चों को सारी सतयुग की भी हिस्ट्री समझाई– कौन रहते हैं, कितने होते हैं, फिर कैसे उनकी सेन्सस की, आदमशुमारी की वृद्धि होती है। फिर आदमशुमारी का भी कोई को बुद्धि में है नहीं कुछ। जब रामराज्य होगा तो आदमशुमारी कितनी होगी, किसकी होगी–

कोई के बुद्धि में है बच्चे? होवे तो समझावें; परन्तु नहीं, कुछ नहीं है कोई के बुद्धि में बिल्कुल ही; क्योंकि होना है वो गुरू, वो गुरू कोई ज्ञान के नहीं हैं। ये कोई सद्गति को देने वाले नहीं हैं; क्योंकि भगत हैं। ये भक्ति के गुरू हैं...। अभी तुम्हारा कपाट खुला है। बोलते हैं ना, कभी भी कोई सुनते हैं– अरे अभी, हमने ऐसा ज्ञान कभी नहीं सुना। ऐसे तो ज्ञान तो बस ये देती है। ये बिल्कुल अच्छी तरह से सारा चक्कर...। अभी तुम तो जानते हो ना– ओहो! हमने अभी कैसे, कभी भी ये ज्ञान नहीं सुना। हम तो ये भक्तिमार्ग के झांझ बजाना, फलाना करना, ये करना, तीर्थ करना, जप करना, यज्ञ करना, तप करना। तो बाप समझाते हैं ना बच्ची– ये यज्ञ,तप,दान,पुण्य वगैरह ये सभी भक्ति। भक्ति–3 हो करके, भक्ति में ही कहते रहते हैं कि हम पतित हैं और हे पतित–पावन आओ। भक्ति करते रहते हैं, ये गाते रहते हैं। इससे सिद्ध होना होता है ना कि हम जो भक्ति करते हैं, उससे हम पतित होते हैं। हे पतित–पावन आओ। भक्ति तो करते रहते हैं। पुकारते रहते हैं कि हे पतित–पावन आओ। तुम भला क्या करते हैं तभी? भक्ति में दुर्गति होती है तब तो रड़ियाँ मारते हैं ना कि हे पतित–पावन आओ। अरे, गंगा में स्नान करते हैं जा करके पतित–पावनी के पास, फिर भी क्यों ऊपर वाले को पुकारते हैं? अरे पर संन्यासी खुद, वो भी कहते हैं– पतित–पावन आओ। फिर भी गंगा में जाकर स्नान करते हैं अपने फॉलोअर्स के साथ। ये तो वण्डर! ये भी एक कौंतक है ना। जैसे कौंतक का गीत सुनाया ना कि....कैसे वो पत्थर की मूर्तियाँ बनाय...। ये सभी किसकी मूर्तियाँ बनी हुई हैं। ये सभी पत्थरों से बनती हैं ना। बच्चे, मार्बल का जो चित्र आते हैं, लक्ष्मी–नारायण का बनाते हैं। मार्बल का बनता है ना। तो मार्बल का तो वो टुकड़ा बड़ा ले करके, फिर उनको जा करके घर्र–घर्र करके फर्स्टक्लास एकदम लक्ष्मी–नारायण का कारीगरी। कोई का चेहरा ऐसा बनाते हैं, जो देखने से दिल खुश हो जाती है। तो पत्थर का चित्र बनाते हैं ना। तो बाप कहते हैं कि देखो, ये पूजा किसकी होती है? पत्थर पूजा। अभी पत्थर का बनाओ, कपड़े का बनाओ, कागज़ का बनाओ, ये भी तो देखो वही हैं ना। है तो यही ना। अच्छा, जब लक्ष्मी–नारायण की मूर्ति यहाँ है कागज़ में, दो–2 पैसे, चार–2 पैसे। आगे तो बहुत अच्छे मिलते थे। रवि वर्मा की प्रिंटिंग आती थी। नाम बाला है। बड़े अच्छे–2 चित्र लक्ष्मी–नारायण (के) बनाते हैं। अच्छा, ये तो घर में भी तो है ना। शिव का चित्र है। वो चित्र निकालकर घर में भी तो बना सकते हैं ना। तो बाप बैठकर समझाते हैं– अच्छा, जभी शिव का चित्र घर में है, तुमको इतना दूर–2 क्यों जाना चाहिए? जैसे हमें यहाँ कुछ... अभी तुमको ज्ञान मिला है ना। समझते हो ना हम क्यों जाते थे इतना दूर, जबकि वही शिव का चित्र। अभी न यहाँ देते हैं, मुख से .....। वहाँ सिर्फ बनाय दिया है कि पानी निकलता है और चुल्लू लेना पड़ता है। तो वहाँ जाते हैं ज्ञान का वो गंगा का पानी। अभी है तो कुछ नहीं वहाँ। ऊपर में थोड़े ही गंगा। गंगा तो बहती है, सीधी चली जाती है। सो भी पानी है, और तो कुछ नहीं है ना बच्ची। ये तो पानी–2 है ना, पीने का है ना। इसमें सब कुछ होते हैं। खेती होती है, इसमें स्नान करते हैं, मच्छ रहते हैं, कच्छ रहते हैं, वाराह रहते हैं, सब कुछ रहते हैं वो। वो अंदर मरते हैं, गंद करते हैं। सब कुछ करते हैं ना। क्या करते होंगे! मछली भी अंदर मरती है, फलाना होते हैं। ये तो क्या है, ये तो बात ही अलग है ना। मच्छ–कच्छ भी तो रहते हैं ना...उसमें। तो उसमें ही स्नान कर, अभी तुम बच्चों को होता है ना ये क्या है, सो भी अच्छा नदी–नाला, अरे बच्ची तीर्थ बने हुए हैं कुरूक्षेत्र वगैरह, नासिक वहाँ। तुम जाओ तो एकदम गंदा पानी, तालाब बहुत गंदा। वो भी

दिन जो होते हैं स्नान करने का ना, सदैव तो पानी उसमें रहता नहीं है। दिन तो बहुत होते हैं, एकादशी का। भई चलो ये तालाब में स्नान करने तीर्थ पर। वहाँ जाओ तो बहुत पानी मैला रहता है। ये तीर्थ तो सब किए हो ना। बहुत मैला एकदम। जैसे बास आती है। पीला हो जाता है पानी। ये उसके ऊपर ... आ जाती है ना बच्ची। उसमें भी जा करके स्नान करते हैं। ये बच्चों ने जिन्होंने तीर्थ किए होंगे अच्छी तरह से वो सब जानते होंगे; क्योंकि तीर्थ तो किए तो होते हैं ना सबके बहुत करके। अभी तुम्हारी आँखें खुलीं, कपाट खुला। बुद्धि का कपाट जिसको माया का, रावण का लॉकप किया हुआ था, वो खुला। अरे, अभी तो तुम देखो क्या नहीं जानती हो! सब जान गए हो ना। किससे जान गए? जो बीज रूप है मनुष्य सृष्टि का परमपिता परमात्मा, ज्ञान का सागर है और उसको कहा ही जाता है–नॉलेजफुल। अरे, महिमा तो देखो कैसे कर दी! आत्मा की महिमा है ना। तो यहाँ भी तो आत्मा की महिमा होनी चाहिए ना। आत्मा की महिमा थोड़े ही होती है। भई आत्मा प्रेजीडेण्ट है फलाने नाम से, ऐसे कहते हैं? महिमा है आत्मा की? नहीं, शरीर की। देह का अभिमान है, तो देह की ही महिमा होती है। अभी देखो महिमा किसकी की जाती है? आत्माओं की। तुम अपनी भी महिमा करते हो, आत्मा की है। अभी हम आत्मा, जो ... दुर्गति को पाए हुए थे– ऐसे कहेंगे ना बच्चे। हम आत्माएँ जो दुर्गति को अभी पाए हुए हैं। हम आत्माओं ने जो 84 जन्म भोगा। ये हमको बोला। अभी आत्मा–2 आत्मा–2 करते रहते हो। हम आत्मा अभी बाबा परमात्मा से वर्सा ले रहे हैं। अभी वर्सा तो इन शरीर साथ लेते हो ना। शरीर तो हैं ना, सुनते हो। नहीं तो शरीर न हो तो सुनें कैसे? बाप को भी शरीर न मिले तो सुनावे कैसे? तो ये वण्डर है ना! अभी तुम्हारा बुद्धि जाती है कि बरोबर शिवबाबा आ करके हमको सहज राजयोग, वही जिसको गीता का ज्ञान कहते हैं, वो सहज राजयोग और ज्ञान सिखलाते हैं; पर कौन सिखलाते हैं? तुम्हारी बुद्धि में क्या है कि शिवबाबा आ करके ब्रह्मा के तन से सुनाते हैं। अच्छा, अभी और कोई जगह में, आगे जाते थे। कहाँ भी जा करके देखो, कोई ऐसे कहते हैं कि शिव भगवानुवाच ब्रह्मा तन से? तो ब्राह्मण चाहिए। वो कोई भी वहाँ ब्राह्मण अपन को समझेंगे? सिर्फ तुम ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ ही समझते हो। तो तुमको ही ज्ञान मिलता है ना बच्चे। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। काहे की? भाई, आदि सनातन देवी–देवता धर्म की। तो ज़रूर वही बैठकर सिखलाएँगे ना। बाप ब्रह्मा द्वारा अभी सिखला रहे हैं ना। इनमें मूँझने की तो बात नहीं है ना। बाप ब्रह्मा तो नहीं समझाते हैं ना। वो समझ करके पीछे समझाते हैं। ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ समझ कर–करके...। कौन से समझते हैं? शिवबाबा से समझते हैं। शिवबाबा ब्रह्मा तन में आय करके हमको समझाते हैं, फिर हम जा करके दूसरों को समझाते हैं। ओरिजिनली हमको समझाने वाला तो शिवबाबा है ना। ये तो बच्ची बाकी तो सभी, तुम भी कहते हो तो हम भी पतित, ब्रह्मा भी पतित। सो भी...सभी कहेंगे, नंबरवन पतित। तुम ऐसे कहेंगे ना बच्चे– हम नंबरवन पतित सो हम नंबरवन पावन बन रहे हैं। लज्जा की तो वो तो नहीं है ना। संन्यासी तो बस कपड़ा डाल दिया, बस वो तो अपन को पवित्र ही समझते हैं; क्योंकि वो तो विकार में जाते नहीं हैं। पीछे अभी तो बहुत ही विकारी बन गए हैं, बहुत ढेर के ढेर। तुम बच्चों को कुछ भी मालूम नहीं है; परन्तु बच्चे बहुत जाने के लिए...। देखो, कितना अनर्थ है यहाँ! ये रावण का कितना अनर्थ है। कितना ये रावण पापाआत्मा बनाते हैं। है ही रावण का राज्य ना। अभी कोई भी नहीं जानते हैं कि ये रावण का राज्य है, रावण किस चीज़ को बोला जाता है।...भले ही रावण के एफीजी को जलाते हैं। कुछ भी नहीं समझते

हैं बिल्कुल ही। बस, ये रावण और सीता और ये एक ही सीता को रावण ने उठाया और रोया–पीटा और जब ये होते हैं तो बच्चियाँ बैठ करके रोती हैं। जेल में जाती है सीता, रोती हैं बैठ करके। .....बहुत कथाएँ बैठ करके सुनती हैं तो वो रोती हैं। तो बच्चों को बैठकर समझाया कि बच्चे अभी तुमको बाबा विकर्माजीत बनाते हैं। बोलते हैं– बच्चे, अभी मामेकम् याद करो। कोई भी तरफ में बुद्धि न लगाए(लगाओ)। तो देखो, यहाँ तुम्हारी बुद्धि बाप की तरफ में लगाई जाती है। अभी तुम जानते हो फिर शिवबाबा आ करके हमको ये सृष्टि के...। अपना तो परिचय दिया– पतित–पावन। परिचय मिला। ये ज़रूर है कि हमको पावन करने के लिए यहाँ आया हुआ है। पतित–पावन यहाँ आते हैं। अच्छा, अगर कहते हैं– ठिक्कर–2 में, भित्तर–2 में। पहले दफे तो भला मनुष्य में आए होंगे ना। अगर बच्चों के लिए 84 जन्म कहते हैं, तो पहले तो भला मनुष्य जन्म में आए होंगे ना। पीछे गधे,बिल्ले,कुत्ते बने होंगे। अच्छा, फिर भी भगवान मनुष्य जन्म में पहले तो भला आए होंगे ना ज़रूर। पीछे तो कुत्ते–बिल्ले और पत्थर–ठिक्कर में जाते होंगे ना। चलो, वो तो अभी तुम समझ गए कि बरोबर भगवान भी तो आया होगा ना यहाँ ज़रूर...। उन्होंने भी तो 84 जन्म लिया होगा। उसके बाद उनको और एक्स्ट्रा दे देते हैं। तुम्हारे लिए नहीं कहते हैं, नहीं, भगवान के लिए कहते हैं कि भगवान ठिक्कर–2 में है, भित्तर–2 में है। तुम्हारे लिए लिमिट रखी 84 लाख जन्म की। भगवान अनलिमिटेड। तुम्हारी भी लिमिट हो गई पुनर्जन्म लेने की, जनावरों की। अरे, बाप को फिर अनलिमिटेड– 84 लाख नहीं, ठिक्कर–2, कण–2 में देखो। बाबा कहते हैं– देखो तो, मुझे कितना दुर्गति को डाल दिया। पत्थर,ठिक्कर,भित्तर में भी डाल दिया। अभी तो तुम समझते हो ना कितना मीठा बाबा, जो तुम बच्चों को स्वर्ग का मालिक बना रहे हैं। हम–तुम बच्चों को, ऐसे कहेंगे ना बच्ची। हम भी पढ़ते हैं ना, तुम्हारा भाई भी है ना। पिता भी है, भाई भी है, माता भी है, बंधु भी है, सखा भी है। खेलते हैं तुम्हारे साथ स्टूडेण्ट लाइफ में। है ना बरोबर। अभी ये है ना तुम्हारे साथ। तो इनमें तो बाबा है तभी। बाबा तो अभी किसका न भाई, न काका, न चाचा, न बाबा, न कुछ न बनेगा ना। हाँ, ये तो है ना बरोबर कि बरोबर ये तुम्हारे से खेलते हैं जबकि बाप इसमें आते हैं। तुम समझते हो बाबा भी हमारे से खेलते हैं। समझे ना! खेल करते हैं, बाबा कहते हैं– आओ, हम तुमको खिलावें। तो इनके द्वारा ये देखो बाबा बैठकर खिलाते हैं हाथ से; क्योंकि आत्मा का ज्ञान है ना। आत्मा ही भासना लेती है ना अच्छे–बुरे की। आत्मा कहती है– ये छी–2 है, ये मीठा है, ये कड़वा है, ये गंद है। अभी... मालूम पड़े कि हम पतित थे, हम गंद करते थे। अरे, हम क्या करते थे? हम शरीर को, एक/दो को पतित बनाते थे। ऐसा आत्मा भी कहेगी ना– हम शरीरों को पतित बनाते थे। अभी हम शरीरों को, देखो याद करो, अभी हम सभी आत्माएँ अपने शरीरों को श्रीमत पर पारस बनाते हैं। हम पवित्र बन करके, सतोप्रधान बन करके सतोप्रधान शरीर लेंगे। अभी आत्मा कहती है ना। आत्मा पढ़ती है ना। तुम भी जानते हो बरोबर परमात्मा हमको पढ़ाते हैं ना। सन्मुख देखो। कोई भी कहाँ भी ऐसे नहीं होगा कि सन्मुख। आत्माएँ सुनते हो इस कानों से? बाबा कहते हैं। क्या कहते हैं? तुम(ने) 84 जन्म लिया है। अभी तुमको पवित्र बनना है। फिर से तुमको सो देवी–देवता बनने हैं। फिर सृष्टि का चक्कर मस्ट रिपीट यानी तुम बच्चे यानी भारत ही समझो सतयुग था। अभी कलहयुग का अंत है। मस्ट रिपीट। तो कौन ये कलहयुग को सतयुग बनाएगा? तो बाप कहते हैं मैं संगम पर आता हूँ। इस सृष्टि को कलहयुग से फिर सतयुग बनाता हूँ और बच्चों को बैठ करके सतयुग के मालिक

बनने के लिए शिक्षा देता हूँ, राजयोग सिखलाता हूँ, पारस बुद्धि बनाता हूँ। फिर ये पारसनाथ–नाथिनी बनेंगे। ठीक है ना बच्चे, पारसबुद्धि। तो सब आत्माओं की बुद्धि... । फिर पारसनाथ–पारसनाथिनी। पारस बुद्धि राजा की, पारसबुद्धि रानी की तथा प्रजा की। अभी इस समय में हैं पत्थर बुद्धि। तो पारसबुद्धि, बहुत सुख, अथाह सुख। अभी पत्थरबुद्धि, दुःख ही दुःख। ये इसको ज्ञान को न जानने कारण, जो साहूकार हैं वो समझते हैं– हम सुखी हैं। हमारे पौत्रे, परपौत्रे, तरपौत्रे, ये सभी खाएँगे, इतना हम धन इकट्ठा करते हैं। अभी तुम समझो, ये तो जानते हो इतना धन जिनके पास, पद्म, वो खाना तो कुछ भी नहीं लेता है। ये बोलते हैं, समझते हैं कि पौत्रे,परपौत्रे,तरपौत्रे ये हमारे सब खाएँगे इसलिए इकट्ठा करते हैं और बड़ा वो रहते हैं। अभी वो तो बिचारे जानते नहीं हैं कि पौत्रे–वौत्रे अभी जो भी जन्म लेंगे ; अभी तो बाकी कितना है? बाकी थोड़ा समय है विनाश के लिए। जो भी जन्म... बड़े ही नहीं होंगे, खाएगा क्या? क्या वर्सा पाएँगे? ये तो सब मट्टी में मिल जाने के हैं। अभी पिछाड़ी में तो इतना नहीं है बच्चे। बाबा ने समझाया है कि बहुत मेहनत लगती है। पिछाड़ी में कितनी मेहनत करके कोई कितना करेगा। एक तो बड़ा हाई ... होगा तमोप्रधान और मारा–मारी, अफवाह ऐसे होगा जो बुद्धि चमकती रहेगी। क्या योग में रह सकेंगे? याद में रह सकेंगे? तो बाबा ने कहा ना– पिछाड़ी में आ करके तुम देते हो ज्ञान। जनक को पिछाड़ी में आ करके मिला है। तो देखो बना? सूर्यवंशी बना? फिर भी वो लोग कहते हैं कि बरोबर राजा एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति पाई। वो कौन–सा जनक राजा? ...फिर त्रेता में जिस जनक को(से) सीता ने जन्म लिया था। देखो, वो बताते हैं ना बच्ची। तो बताते हैं ना संगमयुग पर बाप आया था, ज्ञान लिया, पूरा न लेने के कारण जा करके त्रेता में उनको पद मिला। देखो, ये भी तो समझ की बात है ना। तो कोई आया संगमयुग पर, उसने बैठकर समझाया था। एक जनक राजा था। एक–एक की बात सुनाते हैं ना। देखो, उस जनक की भी कितनी कहानी सुनाते हैं। तो कितनी गीताएँ बनी हैं। तुम जानते हो कितनी गीताएँ और किस–2 ने बनाई हैं, ढेर एकदम; क्योंकि गीता का बहुत महत्व है। परन्तु क्या? इतनी सभी गीताएँ पढ़ते आए हैं जन्म–जन्मांतर। विलायत वाले भी पढ़ते हैं। अरे गीता का ही ज्ञान सुनने के लिए यहाँ आते हैं। क्यों आते हैं विलायत वाले? यहाँ भारत का प्राचीन ; क्योंकि भारत प्राचीन है ना। प्राचीन योग सीखने आते हैं। अभी योग सीखने के लिए ज्ञान चाहिए। तो उस योग सीखने के लिए ज्ञान चाहते हैं कि वो योग क्या था, उसका हमको ज्ञान सुनाओ। डब्बे में ठीकरी एकदम। उनको संन्यासी बनाकर आते हैं। वो समझते हैं यही हैं संन्यासी। संन्यास तो इन्होंने किया है, और तो सभी कुटुम्बी हैं। वो तो ज्ञान सुनाय नहीं सकेंगे। इसलिए वो बिचारे संन्यासियों के पास जाते हैं। अभी ..... क्या मालूम है कि ये सहज राजयोग भगवान ने ब्रह्मा द्वारा आप ब्राह्मणों और ब्राह्मणियों को सुनाया; क्योंकि ये यज्ञ है, उसमें ब्राह्मण चाहिए। ठीक है ना! ये रूद्र ज्ञान यज्ञ शिवबाबा का ज्ञान यज्ञ है.... हमेशा ब्राह्मण चाहिए। देखो, तुम ब्राह्मण हो और यज्ञ रचा हुआ है। ज्ञान यज्ञ है। उसमें और तो कोई आहुति–वाहुति तो नहीं डालते हैं, मंत्र–वंत्र तो नहीं है...। तुमको सारे रचता आ करके तुमको रचना का नॉलेज सुनाते हैं और ये कह देते हैं– बच्चे, ये ज्ञान यज्ञ है। जभी यज्ञ पूरा होता है तो ये सारी जो पुरानी दुनिया है ना, उसमें आहुति पड़ जाती है। अभी ये भी तो है ना सभी आहुति पड़ जाती है, ऐसे तो नहीं प्रलय हो जाती है। ना, प्रलय की तो बात ही नहीं है बिल्कुल। सृष्टि तो ये अविनाशी खण्ड है, इसमें ज़रूर रहते हैं। अच्छा, ये तो बच्चों को बाबा ने समझाया

ना। ये गीत क्या था? (सभी ने कहा– तुम्हीं हो माता...) तुम्हीं माता और पिता...। देखो, गाते रहते हैं, तुम यहाँ उसे जिसको गाते हैं– हे पतित–पावन, तुम मात–पिता, हम बालक तेरे, हमको पावन बना करके, हमको स्वर्ग का सुख दो। वो बिचारों को ये अर्थ भी नहीं जानते हैं और तुम देखो यहाँ बैठ करके वर्सा लेते हो। तुम्हारे को भी कितना मत्था मारना पड़ता है कि बच्चे, अभी बाप से वर्सा लेने का पुरुषार्थ करो। समझा ना! भले जब तलक शरीर हो तब तलक तो तुमको तुम्हारे माँ–बाप की हो, वो तो तुम कुछ कर न...। जभी बालग(बालिग) बनते हो और अगर इस ज्ञान में आते हो, मैं कुमारियों के लिए कहता हूँ, तो जज करो ना कि उस पढ़ाई से हमको क्या फायदा, इस पढ़ाई से क्या फायदा? अभी कौन–सी पढ़ाई पढ़नी चाहिए! अब ये तो उनको समझना पड़े ना। जब समझें अच्छी तरह से, बहुत अच्छा समझें, बाप को भी समझावे कि बाबा, हमको तो ये पढ़ाई पढ़नी है, इनसे हम भविष्य विश्व की महारानी–महाराजा बनेंगे। बाबा, उस पढ़ाई से हम एक नौकर–चाकर, टेलीफोन की जाकर मिस्ट्रेस बनेंगी...। अभी फर्क तो देखो। अच्छा चलो, डॉक्टरानी बनती है, बैरिस्टरानी बनती है चलो, वो वहाँ जाकर एम०पी० भी बनती है, भला क्या! वो तो अभी मर जाएँगी, खतम हो जाएँगी। कुछ भी कमाई नहीं रही। अभी यहाँ तो हम पढ़ते हैं, 21 जन्म भविष्य हम महाराजा–महारानी क्यों न बनें? क्योंकि सब तुम आते हो ना, जो बाबा पूछते हैं– बच्चे, यहाँ क्या बनने लिए आए? हम आए हैं सूर्यवंशी महाराजा–महारानी बनने। देखो है ना बरोबर; क्योंकि एम–ऑब्जेक्ट है ही महाराजा–महारानी बनने का। तो कहाँ महाराजा बनने के लिए और ये जानती हैं बच्चियाँ.. कुमारियाँ बहुत, बालग भी हैं; परन्तु इतनी ताकत नहीं, बुद्धि नहीं; क्योंकि बाबा ने कहा है ना बालग को, जज के पास जाएँगे ना, कितने बरस की हो? भाई जज साहब, हम 21 बरस का। तुमको जो चाहिए सो जाकर करो। तुम फ्री हो, बालग हो। समझा ना! कोई भी धारा–वारा कुछ नहीं चल सकती है; परन्तु क्या करें आजकल ! राज है आसुरी ...। कुछ भी होवे तो हंगामा मच जाते हैं देखो। पाण्डवों को गुप्त रहना। गुप्त देखो रहते हैं? रह ही नहीं सकते हैं गुप्त। झट कुछ न कुछ हंगामा निकल पड़ता है। नहीं तो बच्चों को तो समझ/बुद्धि चाहिए ना। अभी हम बाबा से, शिवबाबा से वर्सा ले करके अंधो की लाठी बनें, औरों को भी हम कुछ बैठ करके समझावें। ये धंधा करें तो हम फिर महारानी बनेंगे। महारथी बनें, ये वीरनी बनें। एक तो ये माया के तूफान को बोला ना– ये कुछ भी नहीं है। ये हम अभी बाबा को याद करते हैं, उनसे शक्ति लेते हैं। भले कितनी भी माया आवे, बस युद्ध भी यही है ना। .... पाँच विकार में घुसाने वाले। हम कभी भी कोई विकार में नहीं जाएँगे। समझा ना! कोई भी गुस्सा करेंगे तो अच्छा हम बैठ करके बाबा को याद करके, हमको तो सदैव मुस्कुराना ही है। रोना तुम्हें है नहीं। बाबा ने मना किया– अगर तुम मेरे बच्चे हो तो बच्चे कभी रोना नहीं। समझा ना! आँखों से आँसू नहीं बहेंगे। नहीं तो कहेंगे इनका जो पति है ना वो भी शायद मर गया, रोती हैं। बाबा कहते हैं ना ऐसे.... जो साजन जिसको मिला हुआ है और क्या तुम रोती हो? वो तो तुमको श्रृंगार रहे हैं महारानी बनाने के लिए। तुमको रोने की क्या दरकार! परवाह थी पारब्रह्म में रहने वाले परमात्मा की, अभी जब वो मिला तब बाकी क्या चाहिए! ये गाया जाता है ना बच्ची– जब परवाह थी भक्तों की पारब्रह्म में रहने वाले बाप की, पतित–पावन की, अभी जब वो पतित–पावन मिला और वो हमको स्वर्ग का मालिक बना... फिर बाकी क्या चाहिए! भई गाते भी तो हैं ना। ऐसे तो नहीं कि नहीं गाते हैं। तो अभी तुम बच्चों को कितना खुशी, खुशी तो बहुत

चाहिए एकदम। हम बेहद के बाप से विश्व का मालिक बन रहे हैं। देखो तो पढ़ाई कितनी! बाबा आया हुआ है इस ब्रह्मा तन में। बरोबर हम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ बनी हैं। सो ज़रूर चोटी बनी हैं, फिर देवता में आएँगे वा वर्ण में आए हैं। अभी वर्ण तो तुमको पक्का याद करना चाहिए ना। 84 जन्म में वर्ण भी याद करना पड़े। तो वर्ण भी याद करते रहो, तुम्हारा विकर्म विनाश होता जाए। ऐसे नहीं कि चुप करके रहना है। नहीं, यही स्वदर्शन चक्र है जो याद करते रहेंगे। तो याद करते रहेंगे तब जब औरों को सुनाते रहेंगे। देखो, बाबा भी सुनाते रहते हैं तो उनको याद रहता है ना। जो सुनाते रहेंगे, वो सुनाते हैं, याद है तब तो सुनाते हैं ना। न याद है तो सुनाय नहीं सकते हैं। तो पद क्या पाएँगे! ये भी तो समझ की बात है ना। अच्छा, अभी टाइम हुआ। टोली ले आओ। फिर अगर विकार में गई.. मुश्किल फिर के आना। ये बच्ची, ये तुम विकार में जाने से सीढ़ी एकदम ऊपर चढ़ जाती हो उल्टी वा कहें एकदम गिर जाती हो, फिर चढ़ना बड़ा मुश्किल होता है। बाबा के पास बहुत आ करके रोती हैं। कभी–2 कोई शादी के एक बरस बाद, 6 महीना के बाद, उसी समय भी आ जाती हैं शादी करके भी। उसी समय रोना लग पड़ता है उनको। ...जब पिछाड़ी कर्मातीत अवस्था होगी और विनाश का समय होगा पूरा। तुम जान जाएँगी अभी हम अभूल बने हैं। अभी हमारी बुद्धि का योग बाबा के साथ, हम बहुत खुश होती हैं, बहुत। जितना लड़ाई नज़दीक आती है, तुम बहुत खुश होती जाएँगी। समझा ना! तुम्हारी बुद्धि में है कि जल्दी लड़ाई लगे, ये विनाश हो तो हम फिर सतयुग में जाकर राज्य करें। जो मस्त हैं एकदम; परन्तु नहीं, बाबा फिर कहते हैं– धीर्य, धीर्य धरो। अरे, अभी तो बाबा के साथ हो। अहो सौभाग्य! जो तुम बाप के साथ हो। वो तुम्हारा फिर भी एक सौभाग्य से, एक भाग कमती हो जाता है जो सतयुग में होते हो। देखो, बाबा कितना अच्छा समझाते हैं। अभी तुम बहुत सौभाग्यशाली हो, बहुत। ईश्वर के गोद में हो। पीछे तुम देवताओं की गोद में जाएँगे। समझा ना! वो कम हो जाएँगे, प्रालब्ध लेते हो। यहाँ तुम बड़ी सेवा करते हो। अरे, भारत को तुम स्वर्ग बना रहे हो और नर्कवासी जानते नहीं हैं। बाकी जो हैं नर्कवासी हैं ना। तुम बच्चियाँ, ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ बैठ करके भारत को स्वर्ग बना रहे हो और नर्कवासी समझ नहीं सकते हैं। जो ब्राह्मण यहाँ आकर समझे, वो समझाएँगे कि हम भारत को फिर से रामराज्य यानी स्वर्ग बना रहे हैं और वो बुद्धू लोग, वण्डरफुल है देखो, तुम स्वर्गवासी बना रहे हो, तुम्हारे से दुश्मनी करते हैं। तो क्या करते थे, पाण्डव और कौरव क्या करते थे? दुश्मनी करते थे। पाण्डवों ने स्वर्ग स्थापन किया ना। तो तुम भी पाण्डव सेना हो ना, पण्डे हो ना। नाम लिखा– पाण्डव भवन, पाण्डवों के रहने का स्थल। अच्छा उठो। बच्चे में से कोई नहीं आया। उठो बच्चे! ...इतना–2 मिर्ची खाएँगी, इतना–2 पानी पिएँगी..... छोटेपन में खेल करते हैं बच्चे आपस में। तुम लोगों को तो अभी डरने का तो कोई डर ही नहीं है एकदम। तुम तो अभी काल को जीतने वाली। समझा ना! महा अकाल से काल को जीतने वाली। तुमको महाकाल भी कहा जाता है। महाकाल का मंदिर भी है। समझा ना! काल के मंदिर हैं, तो महाकाल के भी मंदिर हैं। ...बरोबर ज्ञान सागर के कण्ठे पर ये मेला। पीछे कौन–सा मेला होता है? फिर नदियों का नदियों से मेला, ऐसे कहेंगे ना। नदियों को मालूम है कि सागर माउण्ट आबू पर है।...वहाँ से मुरली बजती है। फिर ये ज्ञान गंगाएँ भिन्न–2 प्रकार कीं, हम उनसे ये ज्ञान सुनते हैं पावन बनने के लिए। ये ह्युमन मनुष्यों की बात है, कोई पानी की थोड़े ही बात होती है। (अधूरी मुरली)